रात्रि क्लास 4/1/69 ओमशान्ति शिवबाबा याद है ?

तुम बच्चे शान्ति के टावर हो। तुम बहुत रायल हो। इनसे रायल कोई होता नहीं। बेहद के बाप के बच्चे हो तो कितने मीठे होकर चलना चाहिए। मैनर्स भी बहुत अच्छे चाहिए। दुःख देते हैं तो फिर बहुत दुःखी होकर मरना पड़ेगा। फिर बड़ी सजाएं खाते हैं। चलन बहुत मीठी चाहिए। बाप कहते हैं अपने घर चलना है। सूक्ष्मवतन में बच्चों को ब्रह्मा का सा0 होता है इसलिये कि तुम भी ऐसे सूक्ष्मवतन वासी बनो। मूवी की प्रैक्टि0 करनी है। बहुत थोड़ा बोलना है। फिर शान्ति के टावर बन जावेंगे। तुमको सिखलाने वाला बाप है फिर हमको औरों को सिखलाना है। यहां असुरों की बहुत टाकी है। भक्तिमार्ग में टॉकी है ना। अभी तुमको बनना है साइलेन्स। तुम हमेशा अन्दर में देखते रहो। कोई अवगुण हो तो निकालते रहो। प्रगट न करो। पहले2 है शान्ति फिर है सुख। तो शान्ति जरूर चाहिए। जास्ती बात नहीं करते हैं उनको शान्ति अच्छी लगती है। मुख्य है पवित्रता। शान्तिधाम में भी पवित्रता बिगर जा नहीं सकते हैं। तो बच्चों को अपने ऊपर अटेन्शन बहुत चाहिए। बाप बैठ समझाते हैं। शान्ति का प्रभाव बहुत रहता है। बाप शान्ति का सागर है तो शान्ति ही सिखलाते हैं। दुनियां तो इन बातों को जानती नहीं है। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। बाप जानते हैं और हम बच्चों को सिखलाते हैं। शान्ति में ही बाप याद आता है। पवित्रता भी होती है। आयु बढ़ती है शान्ति रहती है। पढ़ाई में फिर भी आवाज है। बहुत मनुष्य शान्ति चाहते हैं। विश्व में शान्ति भारत में ही होती है। जबकि भारत सतयुग है। कोशिश करनी चाहिए कोई को दुःख न हो, नहीं तो बहुत बहुत हल्का पद मिलेगा। दास–दासियां जाकर बनेंगे। अच्छा, गुडनाइट।

प्वाइंट्सः– आगे तो पावन देवताओं के आगे माथा टेकते थे। अभी तो पतित, पतित को माथा टेकते रहते हैं। वहां तो पतित होते ही नहीं। नमस्ते आदि करने का भी कोई फैशन (नहीं) होगा। वह सभी पता पड़ेगा वहां कैसे एक/दो को नमस्ते आदि करते हैं। नमस्ते अक्षर तो होगा ही नहीं। कान्ध झुकाना वहां थोड़े ही होता है। वहां तो हरेक बात नई होती है। राजाई भी नई होती है। भाषा भी नई होती है। तुम सभी नई बादशाही पाते हो। तुम्हारी आत्मा भी तमोप्रधान से सतोप्रधान नई बन जाती है। सिखलाने वाला भी नया। वह तो मनुष्य को भगवान कह देते हैं। कुछ समझ ही नहीं आती। उन जैसे बेसमझ और कोई हो न सके। सर्वव्यापी कहना, सभी को ईश्वर समझना कितनी बेसमझी है। इसलिये गाया जाता है अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

शिवजयन्ती पर पहले2 तो अलफ पर समझाना है। बेहद के बाप से बेहद की बादशाही भारतवासियों को मिली थी। स्वर्ग था ना। स्वर्ग की स्थापना करने वाला गॉडफादर है। अभी स्वर्ग नहीं। अभी तो है नर्क। कहते हैं फलाना स्वर्ग गया। तो इससे सिद्ध होता है हेल है। बोलो, स्वर्ग कहां है? तो जरूर नर्क में थे ना। करोड़ों मनुष्य नर्क में पड़े हैं। बाकी तुम स्वर्ग में जाते हो। यह किसको भी पता नहीं है स्वर्ग सतयुग को कहा जाता है कल इन्हों का राज्य था। अभी नहीं है। पुरानी दुनियां को नई दुनियां बाप ही बनावेंगे। बाप का मंत्र भी मशहूर है। गुरू लोग मंत्र देते हैं ना। वह तो जितने गुरू उतने मंत्र। सद्गुरु तो एक ही मन्मनाभव का मंत्र देते हैं। उनको वशीकरण मंत्र कहा जाता है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। मुझ पतित–पावन बाप को याद करो। मुझे याद करो तो बेड़ा पार है। व्यभिचारी याद छोड़ो। बाप को याद करने से वरसा मिल जावेगा। अगर शिव जयन्ती मनानी है तो एक की, जो सब की सद्गति करने वाला है। श्रीमत पर ही यह ऐसे बने हैं। सिवाय तुम्हारे और कोई में भी ताकत नहीं जो बता सके कि पास्ट जन्म में यह करने से यह ऐसे बने हैं। पास्ट जन्म में इन्होंने योगबल की कमाई से यह बने हैं। तुम्हारा है योगबल। उन्हों का बाहुबल।

अच्छा, मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों की रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

बाप और वर्सा याद है ?